>

Title: Need to complete the work of beautification of Connaught Place.

श्री गणेश सिंह (सतना): सभापति महोदय, मैं आपके माध्यम से भारत सरकार का ध्यान देश की राजधानी दिल्ली के एतिहासिक क्षेत्र कनॉट प्लेस, जिसका परिवर्तित नाम राजीव चौक है, की दयनीय स्थिति की ओर दिलाना चाहता हूं। वर्ष 2010 के अक्टूबर में कॉमनवेल्थ खेल होने थे। उस नाते दिल्ली को दुल्हन की तरह सजाने का काम किया जा रहा था। कनॉट प्लेस, जिसे दिल्ली का हृदय कहा जाता है, उसे भी खूब सजाया गया। जगह-जगह पौधे लगाए गए। फूलों के गमले रखे गए। विभिन्न विभागों के बिल्डिंगों की मरम्मत की गयी। पार्किंग प्लेस, लाइट्स, सबको दुरुस्त कर दिया गया। लेकिन, बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि कॉमनवेल्थ खेल को मात्र दो वर्ष बीते हैं और कनॉट प्लेस की स्थिति अत्यंत जर्जर हो चुकी है। पौधे सूख चुके हैं। गमले गायब हो चुके हैं। लाइटें बंद पड़ी हैं। पुल-पुलियों का जो निर्माण हो रहा था, वह भी आधा-अधूरा है। पूरा का पूरा क्षेत्र एकदम धूल में सना हुआ है। एनडीएमसी और सीपीडब्ल्यूडी ने जगह-जगह कूड़ा-करकट बिछा रखा है। सफाई का नामो-निशान नहीं है। विगत दो वर्षों से जो निर्माण कार्य सड़कों पर हो रहे थे, वे सब आधे-अधूरे पड़े हैं।

महोदय, चूंकि दिल्ली देश की राजधानी है, यहां दुनिया भर से लोग आते हैं। कनॉट प्लेस, जिसे मैं दिल्ली का हृदय स्थल कहता हूं और वह सचमुच है भी। लेकिन, वहां आज स्थिति इतनी दयनीय है कि वहां आवागमन पूरी तरह से प्रतिबंधित रहता है। यातायात में जाम लगा रहता है। वहां पर कॉमनवेल्थ गेम के समय से जो निर्माण कार्य प्रस्तावित थे, जो हुए थे, उनकी देखरेख करने वाला आज कोई नहीं है। पहले लगता था कि वाकई में दिल्ली सुन्दर हो जाएगी, पैसा भी खर्च हो गया, लेकिन दिल्ली सुंदर नहीं बन पाई। उसकी देख-रेख करने वाला कोई आदमी नहीं है। पार्लियामेंट के आसपास चारों तरफ भी वही स्थिति है। जितनी सड़कें थीं, उनके चारों तरफ ग्रेनाइट पत्थर लगाए गए थे, बढ़िया फुटपाथ बनाए गए थे, लेकिन आज उनकी देख-रेख करने वाला कोई नहीं है।

सभापति महोदय, मेरा आपके माध्यम से भारत सरकार से निवेदन है कि इतना पैसा बर्बाद हुआ है, कृपा कर उसकी सुरक्षा और व्यवस्था करें।...(व्यवधान) उस समय जो काम नहीं हुआ था, उसे पूरा करने का काम करें।

सभापति महोदय, आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, उसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद।